युवा संगम कार्यक्रम में माननीय राज्यपाल का अभिभाषण

दिनांक : 18 जनवरी 2024, गुरुवार	समय : 10.00 AM	स्थान : राज भवन, असम

नमस्कार !

आज यहां आप सभी का स्वागत करते हुए मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है। वास्तव में यह मेरे लिए विशेष अवसर है, क्योंकि इससे मुझे "युवा संगम" में भाग ले रही युवा शक्ति को संबोधित एवं उन्हें राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने में उनकी भागीदारी के लिए प्रोत्साहित करने का मौका मिला है। इसके लिए मैं आईआईटी गुवाहाटी को धन्यवाद देता हूं।

भारत एक युवा राष्ट्र है और आज हमारे पास विश्व की सर्वाधिक युवा शक्ति है। किसी भी राष्ट्र की सामाजिक-आर्थिक तथा सांस्कृतिक उन्नति में युवाओं की भागीदारी सबसे महत्वपूर्ण है। इसलिए हमें देश की युवा शक्ति का उचित रूप से प्रबंधन करना आवश्यक है।

हमें युवाओं को हमारी वैभवशाली परंपरा और संस्कृति से परिचित कराकर उन्हें राष्ट्रीय भावना से प्रेरित करने के लिए काम करना होगा। भारत तभी आगे बढ़ सकता है, जब युवा हमारे देश के गौरवशाली इतिहास को समझेंगे, देश और समाज की समृद्धि के सपने देखेंगे तथा इन सपनों को साकार करने के लिए हर संभव प्रयास करेंगे।

इसी दृष्टिकोण से भारत सरकार द्वारा "युवा संगम" कार्यक्रम की कल्पना की गई है। "युवा संगम" कार्यक्रम "एक भारत, श्रेष्ठ भारत" की भावना को ताकत देने का अनूठा प्रयास है। वास्तव में यह पूर्वोत्तर क्षेत्र और शेष भारत के युवाओं के बीच घनिष्ठ संबंध स्थापित करने के लिए भारत सरकार की एक विशेष पहल है।

इस कार्यक्रम का उद्देश्य पर्यटन, परंपरा, प्रगति, प्रौद्योगिकी और परस्पर संपर्क की भावना को विकसित करना है। इसके तहत देश के युवा पूरे भारत में यात्राएं करेंगे और एक-दूसरे के प्रदेश में सांस्कृतिक शिक्षा ग्रहण करने का एक अनूठा अवसर प्राप्त करेंगे।

युवा संगम कार्यक्रम हमारी समृद्ध संस्कृति, हमारे गौरवशाली इतिहास और प्राचीन विरासत के दर्शन का प्रतीक है। यह भारत को देखने, जानने, समझने और देश के लिए कुछ करने का मौका देगा। यह व्यापक सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम देश के युवाओं को भारत की प्राचीन संस्कृति और प्राकृतिक विविधता का विस्तार देखने का अवसर प्रदान करेगा।

युवा संगम कार्यक्रम राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 से प्रेरित है। यह आपसी आदान-प्रदान और एक ऐसा ज्ञान प्राप्त करने का अवसर प्रदान करता है, जो पाठ्य-पुस्तकों से परे जाकर एक-दूसरे के रीति-रिवाजों, परंपराओं और भाषाओं की गहरी समझ को बढ़ावा देता है।

"एक भारत श्रेष्ठ भारत" कार्यक्रम विभिन्न राज्यों के लोगों की एकता पर जोर देता है, जिससे राष्ट्रीय एकता और अखंडता की भावना को बढ़ावा मिलता है। यह एकता हमारे देश की प्रगति और समृद्धि के लिए आवश्यक है।

"युवा संगम" कार्यक्रम के पिछले दो चरणों की सफलता के बाद इसका तीसरा चरण बड़े उत्साह के साथ आयोजित किया जा रहा है। मुझे यह जानकर खुशी हुई कि युवा संगम के पहले चरण में आईआईटी गुवाहाटी ने सक्रिय रूप से भाग लिया और अब तीसरे चरण में भी सक्रियता से अपना योगदान दे रही है।

तीसरे चरण के अंतर्गत महाराष्ट्र से आए प्रतिभागियों के लिए असम की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत से परिचित होने और बदले में, महाराष्ट्र की जीवंत संस्कृति को साझा करने का एक अवसर प्रदान करेगा।

महाराष्ट्र, जो भारत के इतिहास, कला और अर्थव्यवस्था में अपने महत्वपूर्ण योगदान के लिए प्रसिद्ध है, हमारे देश की विविधता में अत्यधिक मूल्य जोड़ता है। मुझे विश्वास है कि महाराष्ट्र की समृद्ध सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विरासत के बारे में प्रतिभागियों की अंतर्दृष्टि असम में उनके साथियों के ज्ञान भंडार में बहुत योगदान देगी।

मेरे प्यारे विद्यार्थियों,

भारत का पूर्वोत्तर क्षेत्र न केवल भौगोलिक रूप से कई पड़ोसी देशों के साथ अंतर्राष्ट्रीय सीमा साझा करने के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि यहाँ एक समृद्ध और विविध सांस्कृतिक विरासत का भी सम्मिलित है।

पूर्वोत्तर क्षेत्र अत्यंत सुंदर एवं विविधता से भरपूर है। इस क्षेत्र में 220 से अधिक जातियां हैं, जिसमें से 166 से भी अधिक विभिन्न जनजातियां निवास करती हैं। इनमें से अधिकांश समुदायों की भाषा, बोली और संस्कृति भी भिन्न है। भिन्नता के बावजूद यहां लोग मिलजुल कर रहते हैं, जो अनेकता में एकता के भाव को चरितार्थ करता है।

मुझे बताया गया कि विद्यार्थी सुआलकुची की यात्रा पर जाएंगे। सुआलकुची, जिसे असम का 'रेशम गाँव' कहा जाता है, राज्य की सदियों पुरानी रेशम-बुनाई परंपरा का एक प्रमाण है। सुआलकुची को पूर्वी भारत का मैनचेस्टर कहा जाता है।

1946 में जब राष्ट्रपिता महात्मा गांधी सुआलकुची आए थे, तब उन्होंने यहां की महिला बुनकरों के हुनर को देखकर कहा था, “असम की महिलाएं करघे पर सपनों को बुनती हैं।” "Assamese women weave dreams on their looms."

सुआलकुची की यात्रा आपको न केवल रेशम बुनाई की जटिल प्रक्रिया को देखने इसके उत्पादन की प्रक्रिया को जानने का अवसर प्रदान करेगी, बल्कि इन पारंपरिक शिल्पों के संरक्षण और प्रचार के महत्व को समझने में भी मदद करेगी।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि पूर्वोत्तर राज्य के दौरे पर निकले प्रतिभागियों को पूर्वोत्तर क्षेत्र की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहरों और यहां के भौगोलिक परिवेश के बारे में जानने का अवसर मिलेगा।

मैं आप सभी से यह विचार करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहूंगा कि आप महाराष्ट्र और असम दोनों राज्यों के विकास में कैसे योगदान दे सकते हैं। हम अंतर-राज्य सहयोग को कैसे बढ़ावा दे सकते हैं। इस पर आप अपने विचार साझा करें, चाहे वह शिक्षा, संस्कृति या प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हो।

"एक भारत श्रेष्ठ भारत" कार्यक्रम में भागीदारी केवल सांस्कृतिक आदान-प्रदान के लिए नहीं है, यह व्यक्तिगत और व्यावसायिक विकास का अवसर भी है। यहाँ आप कौशल के साथ-साथ सहानुभूति और विविध संसकृति के बारे में जानने का अवसर प्राप्त होगा।

आपका उत्साह, आपकी भागीदारी और सीखने तथा ज्ञान एवं विचार साझा करने की इच्छा इस कार्यक्रम को सफल बनाएगी है। आप केवल प्रतिभागी नहीं हैं; आप इस पहल के स्तंभ हैं, जो अधिक संयुक्त और विकसित भारत के निर्माण में योगदान दे रहे हैं।

आप सभी से कहना चाहूंगा कि आप इस यात्रा को अपने देश के ऐतिहासिक स्थलों के महत्व को जानने और समझने का अवसर मानें।

मेरी कामना है कि जब आप अपने गृह राज्य लौटें, तो न केवल यादें, बल्कि यहाँ से प्राप्त अनुभवों भी अपने साथ ले जाएँ और इन अनुभवों को अधिक समावेशी और एकीकृत भारत के निर्माण की दिशा में अपने दृष्टिकोण और कार्यों को आकार दें।

अंत में युवा संगम के अंतर्गत आपकी यात्रा के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

धन्यवाद।

जय हिन्द।